#1 Best Seller;Book for all Competitive Exam

अर्थशास्त्र
ECONOMICS

(FOR ALL COMETITIVE EXAM)

PCS
SSC
RAILWAY
BANK
NDA
CTET
State Level Exam

S P Sharma

Downloaded From

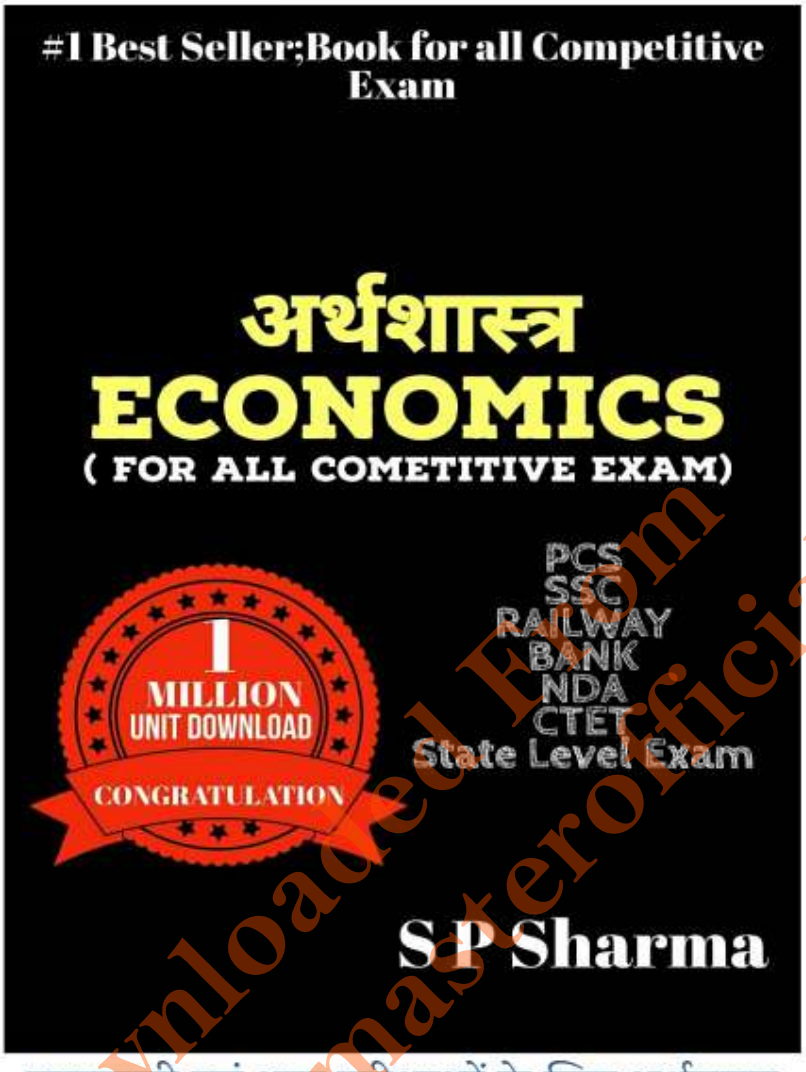

एसएससी एवं अन्य परीक्षाओं के लिए अर्थशास्त्र

परिचय

अर्थशास्त्र: अर्थशास्त्र वह विज्ञान जिसमें अन्त्य एवं दुर्लभ वस्तुओं के बीच सम्बंधो के रूप में मानव व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है, जिनका वैकल्पिक उपयोग होता है"।

समष्टि अर्थशास्त्र: आर्थिक विश्लेषण की वह शाखा है, जिसमें समुच्चय का विश्लेषण सम्पूर्ण अर्थशास्त्र के सन्दर्भ में किया जाता है। समष्टि अर्थशास्त्र में समस्त आर्थिक क्रियाओं का संपूर्ण रूप से अध्ययन किया जाता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र: यह अर्थशास्त्र की एक शाखा है, जो यह अध्ययन करता है कि किस प्रकार अर्थव्यवस्था के व्यक्तिगत अवयव, परिवार एवं फर्म, विशिष्ट रूप से उन बाजारों में सीमित संसाधनों के आवंटन का निर्णय करते हैं, जहां वस्तुएं एवं सेवाएं खरीदी एवं बेचीं जाती हैं।

Downloaded From www.studymasteroffical.com

अर्थव्यवस्था: अर्थव्यवस्था एक ऐसी प्रणाली है जिसके द्वारा लोगों अपनी जीविका प्राप्त करते हैं।

उत्पादन संभाव्यता वक्र (PPC): उत्पादन संभाव्यता वक्र दो वस्तुओं के सभी संभावित समुच्चयों को दर्शाता है, जिसे उपलब्ध संसाधनों व तकनीक की सहयाता से उत्पादित किया जा सकता है।

सीमान्त उपयोगिता लागत(MOC): पीपीसी के साथ विशेष रूप से एमओसी एक अन्य वस्तु की अतिरिक्त इकाई है, जिसकी किसी अन्य वस्तु की अतिरिक्त इकाई के उत्पादन हेतु हानि उठाई जाती है।

रूपांतरण की सीमान्त दर(MRT): MRT, उस वस्तु की इकाइयों का अनुपात है जिसकी किसी अन्य वस्तु की अतिरिक्त इकाई के उत्पादन हेतु हानि उठाई जाती है।

मांग की अवधारणा

मांग: वस्तु की वह मात्रा, जिसे उपभोक्ता दिए गए समय व नियत मूल्य पर खरीदने में सक्षम और इच्छुक हो।

मांग अनुसूची: यह एक तालिकाबद्ध प्रदर्शन है, जो वस्तु के मूल्य और खरीदी गयी मात्रा के मध्य के सम्बन्ध दर्शाता है ।

मांग वक्र: यह मान अनुसूची का एक सचित्र प्रदर्शन है।

व्यक्तिगत मांग: व्यक्तिगत उपभोक्ता द्वारा की गयी मांग।

किसी वस्तु की व्यक्तिगत मांग को प्रभावित करने वाले कारक / मांग के निर्धारक

1. स्वयं वस्तु की कीमत 2. उपभोक्ता की आय
3. सम्बंधित वस्तुओं की कीमत 4. पसंद एवं वरियता 5. भविष्य में कीमत में परिवर्तन की प्रत्याशा

मांग सूत्र: Dx = f(Px, Y, Pr, T)

Downloaded From www.studymasteroffical.com

मांग के नियम: यदि सभी कुछ यथावत् रहे तो वस्तु की माँग उसके मूल्य के घटने के साथ-साथ बढ़ती जाएगी और वस्तु के मूल्य में वृद्धि के साथ उसकी माँग घटती जाएगी। यही माँग का नियम है।

मांग में परिवर्तन

इसके दो प्रकार हैं:

1) मांग की गयी मात्रा में परिवर्तन (एक ही मांग वक्र के साथ उतार-चढ़ाव)

2) मांग में परिवर्तन (मांग में बदलाव)

1) मांग की गयी मात्रा में परिवर्तन: -

वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के कारण मांग में बदलाव, अन्य कारक स्थिर हों; ये दो प्रकार के होते हैं;

A) मांग का विस्तार: कम कीमत पर अधिक मांग

B) मांग का संकुचन: उच्च कीमत पर कम मांग

मांग की गयी मात्रा में परिवर्तन

मूल्य में परिवर्तन के कारण → उतार-चढ़ाव होगा → विस्तार और संकुचन

मांग में परिवर्तन

मूल्य में परिवर्तन के अलावा अन्य कारण → परिवर्तन होगा → वृद्धि और कमी

मांग में परिवर्तन

वस्तु की कीमत के अलावा अन्य कारकों में परिवर्तन के कारण मांग में परिवर्तन होते हैं, ये दो प्रकार के होते हैं:

A) **मांग में वृद्धि** :- अन्य कारकों में परिवर्तन के कारण मांग अधिक होना, मूल्य स्थिर रहते हैं।

B) **मांग में कमी**:- अन्य कारकों में परिवर्तन के कारण मांग कम होना, मूल्य स्थिर रहते हैं।

Downloaded From
www.studymasteroffical.com

मांग में वृद्धि के कारण

1. आय में वृद्धि
2. चयन और वरीयता में बढ़ोतरी / अनुकूल बदलाव।
3. वैकल्पिक वस्तु की कीमत में वृद्धि।
4. पूरक वस्तु की कीमत में गिरावट।

नोट : साधारण वस्तुओं के लिए मांग में वृद्धि के कारण आय में वृद्धि होती है।

मांग में कमी के कारण:

1. **आय में कमी**
2. चयन और वरीयता में प्रतिकूल / कमी
3. वस्तु के विकल्प की कीमत में कमी
4. पूरक वस्तु की कीमत में वृद्धि

नोट: आय के कारणों में कमी सामान्य अच्छे के लिए मांग में कमी

नोट: साधारण वस्तुओं के लिए मांग में कमी के कारण आय में कमी होती है।

वस्तुओं के प्रकार

वैकल्पिक वस्तुएं: अन्य वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने के कारण किसी वस्तु के मूल्य में भी वृद्धि होना। उदाहरण, चाय और कॉफ़ी।

पूरक वस्तुएं: अन्य वस्तु की मांग में कमी होने के कारण किसी वस्तु के मूल्य में भी वृद्धि होना। उदाहरण,पैट्रोल और कार।

साधारण वस्तुएं: वे वस्तुएं, जिनका आय के साथ सकारात्मक सम्बन्ध होता है। इसका अर्थ है कि जब आय बढती है, तो साधारण वस्तुओं की कीमतों में भी वृद्धि होती है।

गौण वस्तुएं: वे वस्तुएं, जिनका आय के साथ नकारात्मक सम्बन्ध होता है।इसका अर्थ है कि जब आय बढती है, तो मांग में कमी आ जाती है, और ठीक इसके विपरीत भी यही होता है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

निम्नस्तरीय वस्तुएं: गिफन वस्तुएं, वे गौण वस्तुएं होती हैं जिन्हें लोग कीमत बढ़ने पर अधिक उपभोग करना शुरू कर देते हैं, मांग की सिद्धांत का उल्लंघन करते हैं। गिफन वस्तुओं की स्थिति में, सस्ते नजदीकी विकल्प उपलब्ध नहीं हैं। विकल्पों की कमी के कारण, आय का प्रभाव हावी हो जाता है, लोगों को अधिक वस्तुएं खरीदनी होती है, यहां तक कि इसकी कीमत बढ़ जाने पर भी।

वेब्लेन वस्तुएं (उर्फ उपनिवेशवादी वस्तुएं): अक्सर गिफेन वस्तुओं के साथ भ्रमित करने वाली वेब्लेन वस्तुएं वे वस्तुएं हैं, जिसकी बढ़ी हुई कीमतें, मांग की मात्रा में वृद्धि करती हैं। हालांकि, यह इसलिए नहीं है कि उपभोक्ता को बजटीय बाधाओं (गिफेन वस्तुओं के मामले में) के कारण अधिक वस्तुएं खरीदनी पड़ती हैं। बल्कि, वेब्लेन वस्तुएं उच्च-दर्जे वाली वस्तुएं हैं, जैसे- कीमती वाइन,ऑटोमोबाइल, घड़ियां, या इत्र। ऐसी वस्तुओं की उपयोगिता स्थिति को निरूपित करने की उनकी क्षमता से जुड़ी हुई हैं। उनकी कीमत कम होने पर, मांग की मात्रा भी कम हो जाती है क्योंकि उनकी स्टेट्स-डीनोटिंग उपयोगिता मध्यमार्गी बन जाती है।

मांग के प्रकार

आड़ी या तिरछी मांग: आड़ी मांग का अर्थ, किसी वस्तु के लिए मांग की उन मात्राओं के परिवर्तन से है, जो उस वस्तु विशेष की कीमत में परिवर्तन न होकर किसी अन्य संबंधित वस्तु की कीमत में परिवर्तन के परिणामस्वरूप होती है। इस प्रकार की मांग प्रतिस्थापन वस्तुओं अथवा पूरक वस्तुओं के संबंध में पाई जाती हैं। प्रतिस्थापन वस्तुएं वे हैं, जो एक दूसरे के बदले में प्रयोग में लाई जाती हैं। जबकि पूरक वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं, जो किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए, एक साथ प्रयोग में लाई जाती हैं।

आय मांग: प्राथमिक रूप से आय पर निर्भर करने वाली मांग को आय मांग कहा जाता है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

प्रत्यक्ष मांग: अंतिम उपभोक्ताओं द्वारा अपनी इच्छाओं अथवा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वस्तुओं व सेवाओं के लिए मांग को प्रत्यक्ष मांग कहते हैं। उदाहरण के लिए, होटल के अतिथियों द्वारा भोजन की मांग करना।

व्युत्पन्न मांग: जब किसी वस्तु की मांग के कारण, अन्य किसी वस्तु की सेवा की मांग उत्पन्न होती है, तो उसे व्युत्पन्न मांग कहा जाता है। क्योंकि श्रम की सहायता से अन्य वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।

संयुक्त मांग: जब कभी एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक साथ दो वस्तुओं की मांग की जाती है, तो उसे संयुक्त मांग कहा जाता है। उदाहरण के लिए ब्रेड और बटर की मांग, क्रिकेट बैट और बॉल की मांग।

संमिश्र मांग: विभिन्न उद्देश्य हेतु प्रयोग के लिए किसी एकल वस्तु की मांग करना **संमिश्र मांग** कहा जाता है।

मांग की कीमत लोच (Ed)

किसी वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप उस वस्तु की माँगी गई मात्रा में होने वाले परिवर्तन की माप को माँग की कीमत लोच कहा जाता है।

Ed. = वस्तु की माँगी गई मात्रा में होने वाला प्रतिशत परिवर्तन/ कीमत में होने वाला प्रतिशत परिवर्तन

Ed. = P/q X Δq/Δp

P = वास्तविक कीमत Q = वास्तविक मात्रा Δ = परिवर्तन

पूर्णतया बेलोचदार मांग (Ed = 0)

Downloaded From www.studymasterofficial.com

जब वस्तु की मांग में, कीमत में परिवर्तन की तुलना में कोई परिवर्तन नहीं आता, तो इस प्रकार की मांग पूर्णतया बेलोचदार मांग कहलाती है।

बेलोचदार (कम लोचदार) मांग (e < 1)

जब कीमत में परिवर्तन के कारण मांगी गयी मात्रा में अनुपातिक परिवर्तन की अपेक्षा से कम होता है, तो मांग कम लोचदार या बेलोचदार होता है।

इकाई लोचदार मांग (e = 1)

जब मांग में प्रतिशत परिवर्तन, कीमत में प्रतिशत परिवर्तन के बराबर होता है, तो वस्तु की मांग इकाई लोचदार कहलाती है। जैसा कि इस आकृति में दिखाया गया है, आयताकार हाइपरबोला इस प्रकार का लोच दर्शाता है।

लोचदार मांग (अधिक लोचदार) (e > 1)

जब कीमत में हल्का परिवर्तन होने से मांग में कीमत की तुलना से अधिक अनुपातिक परिवर्तन होता है, तो लोचदार मांग की स्थिति उत्पन्न होती है इसका अर्थ है, कीमत में एक छोटे परिवर्तन से ही मांग में अधिक परिवर्तन होता है।

पूर्णतया लोचदार मांग (e = ∞)

जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन हुए बिना मांग में कमी या वृद्धि होती है तो यह अवस्था पूर्णतया लोचदार होती है। इसमें स्थिर कीमत पर मांग बदलती रहती है।यह स्थिति पूर्ण प्रतियोगिता की अवस्था में पाई जाती है, जब मांग वक्र लोचदार होती है।

कीमत लोच के निर्धारक

विकल्प की उपलब्धता

खर्च की गयी आय का अनुपात

समय सीमा

आय लोच

Downloaded From www.studymasterofficial.com

आय में एक प्रतिशत परिवर्तन के कारण मांग में प्रतिशत परिवर्तन, कैटरिस पेरिबस।

E_I = (मांग में % □) / (आय में % □)

E_I = (□Q/ □I). (I / Q)

आवश्यकताएं ($0< E_I \leq 1$): उदाहरण, मूलभूत खाद्य पदार्थ एंजल का नियम: जैसे-जैसे आय में वृद्धि होती है, वैसे भोजन पर व्यय होने वाली आय का % घटता है।

मांग की आड़ी-लोच

एक वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण सम्बंधित वस्तु की मांगी गयी मात्रा में होने वाले परिवर्तन के माप को मांग की आड़ी-लोच कहा जाता है। (संबंधित वस्तुओं विकल्प या पूरक सामान हो सकते हैं) दूसरे शब्दों में, कमोडिटी y की कीमत में बदलाव के लिए वस्तु X की मांग का उत्तरदायित्व है।

ec = वस्तु एक्स की कीमत में प्रतिशत में परिवर्तन, वस्तु वस्तु के मूल्य में X / प्रतिशत परिवर्तन

मांग की आड़ी-लोच के मापक

इन्फिनिटी - वस्तु x लगभग और y के लिए एक आदर्श विकल्प है
शून्य - वस्तुएं x और y संबंधित नहीं हैं
नकारात्मक – वस्तुएं x और y पूरक हैं

आपूर्ति का नियम

आपूर्ति का अर्थ है नियत समय में दिये गये दाम पर उत्पादक या विक्रेता बाजार में बेचने के लिए तैयार वस्तुएँ। यह विशिष्ट कीमत पर बिक्री के लिए माल और सेवाओं का उत्पादन करने के लिए निर्माता की क्षमता और उद्देश्य होता है। किसी वस्तु के किसी वस्तु की आपूर्ति को उस मूल्य के

Downloaded From www.studymasteroffical.c

रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो वास्तव में उस कीमत पर प्रति इकाई बिक्री के लिए पेश किया जाता है।

आपूर्ति का नियम मूल्य और आपूर्ति के बीच एक सीधा संबंध स्थापित करता है। फर्म कम कीमतों पर कम और अधिक कीमतों पर अधिक आपूर्ति करेगी। " जब वस्तु की कीमत बढ़ जाती है, अन्य चीजें समान रहती हैं, जब कीमत गिरती हैं, तो इसकी आपूर्ति विस्तृत हो जाती है, इसकी आपूर्ति कम हो जाती है"

आपूर्ति की लोच

आपूर्ति का नियम हमें आपूर्ति की मात्रा कीमत में बदलाव का जवाब देंगा। आपूर्ति की लोच की अवधारणा मूल्य में परिवर्तन की वजह से, आपूर्ति में परिवर्तन की दर की व्याख्या करती है। यह नीचे उल्लेखित सूत्र द्वारा मापी जाती है।

आपूर्ति की लोच = आपूर्ति की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन / कीमत ने आनुपातिक परिवर्तन

बाजार के प्रकार और मूल्य निर्धारण

बाजार : बाजार एक स्थान है जहाँ क्रेता और विक्रेता, वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने और बेचने के लिए एकत्र होते हैं।

बाजार संरचना : एक उद्योग में सक्रिय कंपनियों की संख्या, उनके बीच प्रतिस्पर्धा की प्रकृति और उत्पाद की प्रकृति को संदर्भित करता है।

बाजार के प्रकार

a) पूर्ण प्रतियोगिता, b) एकाधिकार बाजार, c) एकाधिकारी बाजार, d) अल्पाधिकार बाजार,

a) **पूर्ण प्रतियोगिता:** एक बाजार स्थिति को संदर्भित करती है, जिसमे खरीदारों और विक्रेताओं की बड़ी संख्या होती है। फर्में सजातीय उत्पादों को एक समान कीमत पर बेचती हैं।

b) **एकाधिकार बाजार:** एकाधिकार एक बाजार स्थिति है, जिसमे एक विक्रेता का बोलबाला होता है, जिसका कीमत पर पूर्ण नियंत्रण होता है।

Downloaded From www.studymasteroffical.com

c) **एकाधिकारी बाजार:** एक बाजार स्थिति को संदर्भित करता है, जिसमे अनेक फर्में सम्बंधित वस्तुएं बेचती हैं, लेकिन ये विभेदित उत्पाद होते हैं।

d) **अल्पाधिकार बाजार: यह एक बाजार संरचना है, जिसमे एक वस्तु के कुछ बड़े विक्रेता होते हैं और क्रेता बड़ी संख्या में होते हैं।**

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ :

1. क्रेता और विक्रेता अधिक संख्या में होते हैं।
2. सजातीय या समान उत्पाद होते हैं।
3. फार्मों का निर्बाध प्रवेश और बहिर्गमन होता है।.
4. उत्पाद की पूर्ण जानकारी होती है।
5. फर्म एक कीमत लेने वाली है और उद्योग कीमत निर्धारक है।
6. पूर्णतया लोचदार मांग वक्र (AR=MR)
7. उत्पादन के कारक की पूर्ण गतिशीलता होती है।
8. परिवहन लागत का अभाव होता है।
9. बिक्री लागत की अनुपस्थिति होती है।

एकाधिकार बाजार की विशेशताएँ :

1. किसी एक वस्तु का एकमात्र विक्रेता होता है।
2. उत्पाद के निकटतम स्थानापन्न का अभाव होता है।
3. एक नई फार्म के प्रवेश में कठिनाई होती है।
4. नकारात्मक ढलान मांग वक्र (AR>MR)
5. कीमतों पर पूर्ण नियंत्रण होता है।
6. कीमत विभेदन या भेदभाव मौजूद होता है।
7. असामान्य लाभ का अस्तित्व होता है।

एकाधिकारी बाजार की विशेषताएँ :

1. क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या लेकिन पूर्ण प्रतियोगिता से कम होती है।
2. उत्पाद विभेदन होता है।
3. व्यवसाय में प्रवेश और निकास की स्वतंत्रता होती है।
4. बिक्री लागत होती है।
5. पूर्ण जानकारी का आभाव होता है।.

Downloaded From www.studymasteroffical.com

6. परिवहन लागत की अधिकता होती है।
7. कीमत पर आंशिक नियंत्रण होता है।

अल्पाधिकार बाजार की विशेषताएँ:

1. कुछ प्रमुख फर्में होती हैं, जो आकार में बड़ी होती हैं।
2. परस्पर निर्भरता होती है।
3. प्रवेश पर प्रतिबंध या रुकावट होती है।
4. सजातीय या अलग-अलग उत्पाद होते हैं।
5. कीमत में स्थिरता होती है।

विकंपित मांग मॉडल (The Kinked Demand Model)

एक अल्पाधिकार बाजार में कीमत की स्थिरता को व्यक्त करता है।

यह इसकी व्याख्या नहीं करता है कि कैसे कीमत वास्तविक रूप से निर्धारित की गई थी।

Downloaded From www.studymasteroffical.c

शुद्ध प्रतियोगिता की विशेषताएँ :

1. क्रेताओं और विक्रेताओं की बड़ी संख्या होती है।
2. सजातीय या समरूप उत्पाद होता है।
3. फर्म के प्रवेश और बहिर्गमन की स्वतंत्रता होती है।

विक्रय लागत क्या है?

उत्तर: एक फर्म द्वारा बिक्री के संवर्धन या प्रचार के लिए किए गए व्यय को विक्रय लागत कहते हैं। (विज्ञापन लागत)

उत्पाद विभेदन क्या है?

उत्तर : इसका अर्थ है कि विभिन्न उत्पादकों द्वारा निकटतम स्थानापन्न वस्तुओं की पेशकश की जाती है ताकि उनका उत्पाद, बाजार में उपलब्ध

अन्य उत्पादों से पृथक लगे। क्रेताओं को आकर्षित करने के लिए विभेदन रंग, आकार, पैकिंग, ब्रांड-नाम आदि में हो सकता है।

पेटेंट अधिकार से क्या मतलब है?

उत्तर:- पेटेंट अधिकार, एक विशेष अधिकार है या एक कंपनी को एक विशिष्ट प्रौद्योगिकी द्वारा एक विशेष उत्पाद का उत्पादन करने का लाइसेंस प्रदान करना है।

कीमत विभेदन क्या है?

उत्तर: - यह समान उत्पाद की विभिन्न इकाइयों के लिए अलग-अलग ग्राहकों से विभिन्न कीमतें वसूलने को संदर्भित करता है।

विज्ञापन क्या है?

विज्ञापन उत्पाद विभेदन को प्राप्त करने का एक तरीका है। विज्ञापन का उद्देश्य मांग वक्र को दायीं ओर खिसकाना और मांग को कम लोचदार बनाना है।

उत्पादन

उत्पादन : उत्पाद प्राप्त करने के क्रम में आदानों के संयोजन को उत्पादन कहते हैं।

उत्पादन फलन : यह प्रौद्योगिकी के दिए गए क्षेत्र के बीच, इनपुट और आउटपुट के बीच कार्यात्मक संबंध को दर्शाता है। **Q= f(L,K)** यहाँ: Q आउटपुट है, L: श्रम है, K: पूंजी है।

स्थाई कारक : वह कारक, जिसका उत्पाद के स्तर के साथ परिणाम स्थिर रहता है।

अस्थिर कारक : वे आगतें जो उत्पादन के स्तर के साथ परिवर्तित होती हैं।

उत्पादन फलन और समय की अवधि

1. उत्पादन फलन एक लंबी अवधि का उत्पादन फलन है, यदि सभी इनपुट भिन्न-भिन्न है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

2. उत्पादन फलन एक अल्प अवधि उत्पादन फलन है, यदि कुछ अस्थिर कारक, कुछ स्थाई कारकों के साथ संयोजित होते हैं।

उत्पाद की अवधारणा :

कुल उत्पाद: दिए गए इनपुट्स की संख्या के साथ, दिए गए समय के दौरान एक फर्म / उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं की कुल मात्रा।

औसत उत्पाद = अस्थिर इनपुट का प्रति इकाई उत्पाद।

APP = TPP / अस्थिर कारक की इकाइयाँ

औसत उत्पाद को औसत वास्तविक उत्पाद के नाम से भी जानते हैं।

सीमांत उत्पाद (MP): जब अस्थिर कारक की एक अतिरिक्त इकाई कार्यरत होती है, तो यह कुल उत्पाद में वृद्धि को संदर्भित करता है।

$MPn = TPn - TPn-1$

MPn = अस्थिर कारक की nवीं इकाई का सीमांत उत्पाद,

TPn = अस्थिर कारक की n वीं इकाई का कुल उत्पाद,

TPn-1= अस्थिर कारक की (n-1) इकाई का कुल उत्पाद,

n= अस्थाई कारक की इकाइयों की संख्या

$MP = \Delta TP / \Delta n$

हम MP TP = ΣMP के संक्षेप द्वारा TP निकालते हैं।

अस्थिर समानुपात का नियम लघु अवधि उत्पादन फलन या एक स्थिर कारक की वापसी

अस्थिर समानुपात के नियम का कथन: लघु अवधि में, अन्य कारक स्थिर रखते हुए जब केवल एक अस्थिर कारक में वृद्धि होती है, कुल उत्पाद(TP) आरम्भ में एक वृद्धि दर से बढ़ता है, फिर एक घटती दर से बढ़ता है और अंत में TP घटता है।

MPP आरंभ में बढ़ता है फिर गिरता है लेकिन सकारात्मक बनी रहती है तो तीसरे चरण में यह ऋणात्मक हो जाएगी।

अवस्था I / चरण I / एक कारक के लिए बढ़ता हुआ प्रतिफल

- TPP एक बढ़ती हुई दर से बढ़ जाती है।
- MPP भी बढ़ जाती है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

अवस्था II / चरण II / एक कारक के लिए ह्रासमान प्रतिफल

- TPP घटती दर से बढती है
- MPP कम हो जाती है / गिरता है
- जब MPP शून्य होता है और TPP अधिकतम होता है तो यह अवस्था समाप्त हो जाती है।

अवस्था III / चरण III / एक कारक के लिए ऋणात्मक प्रतिफल

- TPP कम / घट जाती है।
- MPP ऋणात्मक हो जाती है।

एक कारक के लिए बढ़ते हुए प्रतिफल के कारण

- स्थिर कारक का बहतर प्रयोग,
- अस्थिर कारक की दक्षता में वृद्धि होती है,
- कारकों का इष्टतम संयोजन,

एक कारक के लिए ह्रासमान प्रतिफल के कारण-

- कारकों की अविभाज्यता,
- अपूर्ण स्थानापन्न,
- एक कारक के लिए ऋणात्मक प्रतिफल के कारण
- स्थाई कारकों का परिसीमन,
- अस्थाई और स्थाई कारकों के बीच खराब समन्वय,
- अस्थाई कारकों की दक्षता में कमी,

MPP और **TPP** के बीच संबंध

- जब तक MPP बढ़ता है, TPP एक बढ़ती हुई दर से बढ़ती है।
- जब MPP घटती है, TPP घटती हुई दर से बढती है।
- जब MPP शून्य होती है, तो TPP अधिकतम होती है।
- जब MPP ऋणात्मक होती है तो TPP घटना आरंभ हो जाती है।

Downloaded From www.studymasteroffical.c

दीर्घकालिक उत्पादन फलन – पैमाने के प्रतिफल

दीर्घकाल में, सभी साधन या कारक बदल सकते हैं। पैमाने का प्रतिफल उत्पाद में परिवर्तन का अध्ययन करता है, जब सभी साधन या आगत परिवर्तित होते हैं। पैमाने में वृद्धि का अर्थ है कि सभी आगतें और साधन समानुपात में बढ़ते हैं।

पैमाने के प्रतिफल की तीन अवस्थाएं -

पैमाने में परिवर्तन का एक परिणाम के रूप में उत्पादन में परिवर्तन तीन चरणों में अध्ययन किया जा सकता है। वे हैं

उत्पादन में परिवर्तन, पैमाने में परिवर्तन के परिणाम में रूप में इसका तीन अवस्थाओं में अध्ययन किया जा सकता हैं। ये इस प्रकार हैं-

(i)बढ़ता हुआ पैमाने का प्रतिफल (ii) स्थिर पैमाने का प्रतिफल (iii) ह्रासमान पैमाने का प्रतिफल

बढ़ता हुआ पैमाने का प्रतिफल

यदि सभी साधनों में वृद्धि से, उत्पादन में आनुपातिक वृद्धि अधिक होती है, तो यह 'बढ़ता हुआ पैमाने का प्रतिफल' कहलाता है। उदाहरण के लिए- यदि सभी आगतों में 5% की वृद्धि होती है, तो उत्पादन में 5% से अधिक वृद्धि होती है अर्थात 10%, इस स्थिति में सीमांत उत्पाद बढ़ता जायेगा।

स्थिर पैमाने का प्रतिफल

यदि हम दिए गए अनुपात में (अर्थात पैमाने में) सभी साधनों में वृद्धि करते हैं, तो उत्पादन समान अनुपात में बढ़ेगा, अर्थात सभी साधनों में 5% की वृद्धि, उत्पादन में 5% की वृद्धि के समानुपाती होगी। यहाँ सीमांत उत्पाद स्थिर होता है।

ह्रासमान पैमाने का प्रतिफल

यदि सभी साधनों में वृद्धि से, उत्पादन में आनुपातिक वृद्धि कम होती है, तो यहह्रासमान पैमाने का प्रतिफल कहलाता है अर्थात यदि सभी साधनों में 5% की वृद्धिहोती है तो उत्पादन में 5% से कम वृद्धि होगी अर्थात 3% की वृद्धि। इस अवस्था में सीमांत उत्पादन में कमी आएगी ।

कॉब - डगलस उत्पादन फलन

Downloaded From www.studymasteroffical.com

अर्थशास्त्र में सबसे सरल और सबसे व्यापक रूप से जिस उत्पादन फलन का प्रयोग होता है वह कॉब - डगलस उत्पादन फलन है। यह एक सांख्यिकीय उत्पादन फलन है जिसे प्रोफेसरों 'सी.वी कॉब' और पी.एच डगलस ने दिया था।

कॉब - डगलस उत्पादन फलन निम्न प्रकार से अनुसरण करता है : $Q = bL^aC^{1-a}$ जिसमे **Q** = वास्तविक उत्पादन, **L** =श्रम, **C** = पूंजी, **b** = श्रम की इकाइयों की संख्या, **a** = श्रम प्रतिपादक, **1-a** = पूंजी का प्रतिपादक,

ऊपर दिए गए उत्पादन फलन के अनुसार, यदि उत्पादन के दोनों साधनों (श्रम और पूंजी) में 1% की वृद्धि होती है, तो उत्पादन (कुल उत्पाद) श्रम और पूंजी के प्रतिपादक के योग द्वारा बढ़ जायेगा अर्थात (a+1-a) हो जायेगा। a+1-a =1 के बाद से, समीकरण के अनुसार, जब आगतों में 1% की वृद्धि होती है, तो उत्पादन में भी 1% की वृद्धि होती है। इसप्रकार, कॉब - डगलस उत्पादन फलन केवल स्थिर पैमाने के प्रतिफल को वर्णित करता है।

ऊपर दिए गए उत्पादन फलन में, प्रतिपादकों का योग उत्पादन फलन में "पैमाने के प्रतिफल की डिग्री को दर्शाता है।

a + b >1 : बढ़ता हुआ पैमाने का प्रतिफल
a + b =1 : स्थिर पैमाने का प्रतिफल
a + b <1 : ह्रासमान पैमाने का प्रतिफल

लागत

उत्पादन की लागत:: वस्तुओं और सेवाओं के लिए विभिन्न आदानों पर किया जाने वाला व्यय ।

लागत फलन: लागत और उत्पादन के बीच कार्यात्मक संबंध ।
C=f(q) जहाँ f= कार्यात्मक संबंध, c= उत्पादन की लागत, q=उत्पाद की मात्रा

Downloaded From www.studymasterofficial.com

लागत के प्रकार

नगदी लागत: एक फर्म द्वारा वस्तु या सेवा के उत्पादन के लिए किया गया नगदी खर्च ।

स्पष्ट लागत: उत्पादन के साधनों को रखने में किया गया वास्तविक भुगतान। उदाहरण के लिए-कार्य पर रखे गए मजदुर को मजदूरी का भुगतान, किराए पर लिए गए आवास के लिए किया गया भुगतान, कच्चे माल की लागत आदि।

अंतर्निहित लागत: स्वयं के स्वामित्व वाले उत्पादन के साधनों पर आने वाले खर्च की लागत। उदाहरण के लिए – स्वामी की पूंजी पर लगने वाला ब्याज, स्वयं की इमारत का किराया, उद्यमी की सेवाओं के लिए वेतन आदि।

अवसर लागत: अगला सबसे अच्छा पूर्व निश्चित विकल्प

स्थायी लागत: वह लागत जो उत्पादन के स्थायी साधनों पर खर्च की जाती है। जो कुछ भी उत्पादन के पैमाने तय किए जा सकता है, ये लागतें स्थायी रहती हैं। ये लागतें सम दर्शाती हैं जब उत्पादन शून्य होता है। ये लागतें अल्पकाल के लिए उपस्थित होती हैं लेकिन दीर्घकाल में लुप्त हो जाती हैं।

कुल परिवर्तनीय लागत: TVC या परिवर्ती/ अस्थायी लागत– वे लागतें जो उत्पादन में परवर्तन के साथ प्रत्यक्ष रूप से अलग-अलग होती है। ये लागतें उत्पादन के परिवर्ती साधनों पर व्यय की जाती है। इन लागतों को "प्रधान लागतें", "प्रत्यक्ष लागत" या "परिहार्य लागत" भी कहते हैं। ये लागतें शून्य होती हैं जब उत्पादन शून्य होता है।

Downloaded From
www.studymasteroffical.c

कुल लागत : ये वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में साधनों और गैर-साधन आगतों पर किया जाने वाला कुल व्यय है। यह उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर TFC और TVC के योग द्वारा प्राप्त होता है।

TC, TFC और TVC के बीच संबंध

1. TFC, x-अक्ष के क्षैतिज होता है।
2. TC और TVC, परिवर्ती अनुपात के नियम के कारण, S आकृति(ये आरम्भ ने ह्रासमान दर से बढ़ता है, फिर अंतिम रूप से बढ़ती हुई दर से बढ़ता है) में होते हैं।
3. उत्पादन के शून्य स्तर पर, TC, TFC के बराबर होता है।
4. TC और TVC वक्र एक दूसरे के समानांतर होते हैं।

औसत परिवर्ती लागत

यह उत्पादन की परिवर्ती लागत की प्रति इकाई लागत है।

AVC = TVC / उत्पादन

AVC, आरंभिक उत्पादन में प्रत्येक वृद्धि के साथ गिरता है।

जब उत्पादन का इष्टतम स्तर प्राप्त होता है, तो AVC बढ़ना आरंभ हो जाता है।

औसत कुल लागत (ATC) या औसत लागत (AC): यह उत्पादन की प्रति इकाई कुल लागत को संदर्भित करता है।

सीमांत लागत : जब उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन किया जाता है, तो यह कुल लागत में योग को बनाता है।

MCn = TCn-TCn-1 or MC = ΔTC / ΔQ

नोट : **MC**, **TFC** द्वारा प्रभावित नहीं होती है।

AC और MC के बीच संबंध

- AC और MC दोनों, TC से उत्पन्न होते हैं।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- AC और MC दोनों, "U" आकृति में होते हैं (परिवर्ती अनुपात का नियम)
- जब AC गिरता है तो MC भी गिरता है और यह AC वक्र के नीचे होता है।
- जब AC बढ़ता है तो MC भी बढ़ता है और AC वक्र के ऊपर होता है।
- MC, AC को काटता है जब यह न्यूनतम होता है, जहाँ MC = AC,

राजस्व

राजस्व : एक फर्म द्वारा दिए गए उत्पाद की बाजार में बिक्री से प्राप्त धन को राजस्व कहते हैं

कुल राजस्व: दिए गए उत्पादन की बिक्री से प्राप्तियां या कुल प्राप्तियां।

TR = बेचीं गई मात्रा × **कीमत (या) बेचा गया उत्पाद × कीमत**

औसत राजस्व: बेचे गए उत्पाद की प्रति इकाई प्राप्त रसीद या राजस्व,

- AR = TR / बेचा गया उत्पादन
- AR और कीमत समान है।
- TR = बेचीं गई मात्रा × **कीमत या बेचा गया उत्पादन × कीमत**
- AR = (उत्पादन / मात्रा ×कीमत) / उत्पादन / मात्रा
- AR= कीमत
- AR और मांग वक्र समान हैं। यह विभिन्न कीमतों पर मांगी गई मात्रा को दर्शाता है

सीमांत राजस्व: उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई को विक्रेता द्वारा बेचने पर प्राप्त अतिरिक्त राजस्व।

$MRn = TR\,n - TR\,n\text{-}1$ · $TR = \Sigma MR$

AR और MR के बीच संबंध (जब कीमत स्थित बनी रहती है या पूर्ण प्रतियोगिता हो),

पूर्ण प्रतियोगिता के तहत, विक्रेता कीमत लेने वाला होता है, बाजार में एकल कीमत प्रचलन में होती है। इस कारण से सभी वस्तुएं समरूप होती हैं ओ समान कीमत पर बेचीं जाती हैं, AR = MR, परिणाम के

Downloaded From www.studymasterofficial.com

अनुसार AR और MR वक्र ox-अक्ष के क्षैतिज समानांतर रेखा में हो जाएगा। (जब कीमत स्थिर या पूर्ण प्रतियोगिता हो)

TR और MR के बीच संबंध (जब कीमत निरंतर स्थिर हो या पूर्ण प्रतियोगिता हो)

जब केवल एक कीमत होती है, तब विक्रेता कोई भी मात्रा इस कीमत पर बेच सकता है, कुल राजस्व में स्थिर दर से वृद्धि होती है (MR x-अक्ष से क्षैतिज है)

एकाधिकार और एकाधिकारी बाजार के तहत, **AR और MR के बीच संबंध(कीमत में परिवर्तन या अपूर्ण प्रतियोगिता के** तहत)

- दोनों बाजारों में AR और MR वक्र का नीचे की और ढलान हो जाएगा।
- AR, MR के ऊपर है।
- AR ऋणात्मक कभी नहीं हो सकता।
- AR वक्र, एकाधिकार बाजार में कम लोचदार होता है क्योकि इसका कोई स्थानापन्न वस्तुएं नहीं होता है।
- AR वक्र, एकाधिकारी बाजार में अधिक लोचदार होता है क्योकि यहाँ स्थानापन्न वस्तुएं होती हैं।

TR और MR के बीच संबंध(जब कीमत उत्पादन की बिक्री में वृद्धि के साथ गिरती है)

- अपूर्ण प्रतियोगिता के तहत AR नीचे की ओर झुकेगा, जो अधिक इकाइयों को केवल एक कम कीमत पर बेच सकता है।
- MR , AR/ कीमत के प्रत्येक बार गिरने के साथ गिरता है और AR वक्र के नीचे आता है।
- जब तक TR में वृद्धि होती है, MR सकारात्कम रहता है।
- TR गिरता है जब MR ऋणात्मक होता है।
- TR अधिकतम होता है जब MR शून्य है।

ब्रेक-ईवन बिंदु: यह उस बिंदु पर होता है जहाँ TR = TC या AR=AC होता है। फर्म सामान्य लाभ प्राप्त करेगी।

नीचे जाता बिंदु : एक स्थिति जब एक फर्म केवल परिवर्ती लागतों को बचाने में सक्षम होती है या TR = TVC,

Downloaded From www.studymasteroffical.com

सूत्र एक नजर में :

- TR = कीमत या AR × **बेचा गया उत्पादन या** TR = Σ MR
- AR (कीमत) = TR ÷ बेची गई इकाइयाँ
- MR n = MR n – MR n-1

MACRO ECONOMICS

समष्टि अर्थशास्त्र

राष्ट्रीय आय की महत्वपूर्ण अवधारणाएं:

1. बाजार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद।
2. बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद।
3. बाजार मूल्य पर शुद्ध घरेलू उत्पाद।
4. बाजार मूल्य पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद।
5. साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद।
6. साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद।
7. साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद।
8. साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद।
9. निजी आय।
10. व्यैक्तिक आय।
11. व्यय योग्य व्यैक्तिक आय।

(1) बाजार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद (MP **पर** GDP):-

बाजार मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद देश के अपने क्षेत्र के भीतर निर्मित अंतिम सामान और सेवाओं का कुल धन मूल्य है। इसलिए एमपी पर जीडीपी की गणना के लिए घरेलू क्षेत्र में

उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं को उनके संबंधित मूल्यों से गुणा किया जाता है। प्रतीकात्मक MP पर GDP = PXQ। जहां P, बाजार मूल्य है और Q अंतिम सामान और सेवाएं है।

(2) बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (MP **पर GNP**):-

बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद एक व्यापक और विस्तृत अवधारणा है। बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद विदेशों से प्रति काउंटर प्लस शुद्ध साधन आय में सालाना उत्पादित सभी अंतिम उत्पादों के धन मूल्य को मापता है। लघु जीएनपी में जीडीपी और शुद्ध साधन

Downloaded From www.studymasteroffical.c

आय विदेशों से अर्जित की गई है। जीएनपी में देशवासियों द्वारा देश के बाहर उत्पादित वस्तुओं के मूल्य भी सम्मिलित किया जाता है।

(3) बाजार मूल्य पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (MP पर NDP):-

बाजार मूल्य पर शुद्ध घरेलू उत्पाद, बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद तथा विदेश से सकल शुद्ध साधन आय के मध्य का अंतर है।

(4) बाजार मूल्य पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (MP पर NNP):-

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद, किसी देश में एक वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं की चालू कीमत पर शुद्ध धन मूल्य का मापक है। बाजार मूल्य कम मूल्यह्रास पर यह सकल राष्ट्रीय उत्पाद है। इसे आउटपुट पूंजी परिसंपत्तियों के उत्पादन में लगातार उपयोग किया जाता है। इस निश्चित पूंजी की खपत को मूल्यह्रास कहा जाता है। मूल्यह्रास नियत पूंजी के मूल्य की हानि का गठन करता है। इस प्रकार शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद एक वर्ष के दौरान उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का शुद्ध धन मूल्य है। कुल उत्पादन से मूल्यह्रास भत्ते को छोड़कर शुद्ध धन मूल्य प्राप्त किया जा सकता है।

(5) साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद (FC पर NDP):-

साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद या घरेलू आय वह आय होती है, जिसे उत्पादन के सभी साधनों द्वारा एक वर्ष के दौरान किसी राष्ट्र के घरेलू क्षेत्र के भीतर वेतन,ब्याज,लाभ और किराए के रूप में की गयी कमाई है| इस प्रकार, साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद प्रादेशिक अवधारणा है| दूसरे शब्दों में, अन्य साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद, विदेश से शुद्ध साधन आय से कम साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद के समान है|

(6) साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (FC पर NNP)

साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं| राष्ट्रीय आय अथवा साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद मजदूरी,लगान, ब्याज और लाभ के रूप में उत्पादन के साधनों को दिए जाने वाले भुगतानों को संदर्भित करती है| संक्षेप में, समस्त साधन भुगतानों की योग को ही राष्ट्रीय आय कहते हैं| **किसी एक लेखा वर्ष में किसी देश की घरेलू सीमा में अर्जित कुल साधन आय (लगान+मजदूरी+ब्याज तथा लाभ) तथा विदेशों से शुद्ध साधन आय का योग साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय कहलाता है|**

Downloaded From www.studymasteroffical.com

अर्थात साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद एक वर्ष में एक देश के सामान्य निवासियों द्वारा अर्जित कुल साधन आय का जोड़ होता है|

(7) साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद **(FC पर GDP):**

साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद का सम्बन्ध किसी देश के घरेलू क्षेत्र के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं की कीमत से है| यदि साधन लागत पर शुद्ध घरेलू उत्पाद को नियत पूँजी के मूल्यह्रास या खपत से जोड़ दिया जाए, तो इसे साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद कहा जाता है|

(8) साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद **(FC पर GNP):-**

साधन लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद, बाजार मूल्य पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद से अप्रत्यक्ष कर घटाकर व सब्सिडी जोड़कर प्राप्त किया जाता है अथवा साधन लागत पर सकल घरेलू उत्पाद से विदेशों से शुद्ध साधन आय जोड़कर प्राप्त किया जाता है।

(9) निजी आय:-

निजी आय से अभिप्राय उस आय से होता है, जो निजी क्षेत्र के लोगों को किसी भी स्त्रोत से प्राप्त होती है| इसके अंतर्गत निजी क्षेत्र को मिलने वाली सभी आय भुगतान (जैसे- वेतन व मजदूरी, किराया, ब्याज, लाभ, मिश्रित आय आदि) तथा गैर-आय भुगतान(जैसे सभी प्रकार के ट्रांजेक्शन भुगतान) आते हैं| इसमें विदेशों से प्राप्त शुद्ध आय भी शामिल है| निजी क्षेत्र की आय ज्ञात करने क लिए, निजी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से प्राप्त आय में, विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय भी जोड़नी होगी| इसके अतिरिक्त निजी आय में सरकार के चालु ट्रांजेक्शन, शेष विश्व से शुद्ध चालु ट्रांजेक्शन व राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज को सम्मिलित किया जाता है|

(10) व्यैक्तिक आय:-

वह आय जो देशवासियों को वास्तव में प्राप्त होती है, व्यैक्तिक आय को ज्ञात करने के लिए राष्ट्रीय आय में से निगम करों तथा सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों के लिए किये गए भुगतान घटाते हैं तथा सरकारी ह्स्तान्तरण भुगतानों, व्यापारिक भुगतानों तथा सरकार से प्राप्त शुद्ध ब्याज को जोड़ देते हैं|

(11) व्यय योग्य व्यैक्तिक आय:-

Downloaded From www.studymasteroffical.com

व्यय योग्य व्यैक्तिक आय ज्ञात करने के लिए, व्यैक्तिक आय में से व्यैक्तिक प्रत्यक्ष करों को घटाया जाता है, अर्थात वह आय जिसे लोग अपनी इच्छा से व्यय करने के लिए स्वतंत्र हो, व्यय योग्य व्यैक्तिक आय या प्रयोज्य आय कहलाती है| अन्य शब्दों में सभी प्रकार के प्रत्यक्ष कर चुकता करने के बाद किसी व्यक्ति के पास, जो आय शेष रह जाती है उसे व्यय योग्य व्यैक्तिक आय कहते हैं|

अवधारणा

- NNP Mp = GNP mp –मूल्यह्रास
- NDP Mp = GDPmp – मूल्यह्रास
- NDP Fc = NDP mp – शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (अप्रत्यक्ष कर – सब्सिडी)
- GDP Fc = NDP fc + मूल्यह्रास
- NNP Fc = GDP mp - मूल्यह्रास + विदेश से शुद्ध साधन आय - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

नाममात्र GNP को परिभाषित करें:

Ans. GNP को वर्तमान बाजार मूल्य के संदर्भ में जीएनपी को नाममात्र जीएनपी कहा जाता है।

वास्तविक GNP को परिभाषित करें:

Ans. GNP की स्थिर कीमतों पर गणना (आधार वर्ष मूल्य) की वास्तविक जीएनपी कहा जाता है।

साधन भुगतान: साधन भुगतान, सामान और सेवाओं को उपलब्ध कराने के एवज में किया गया भुगतान है। एक श्रमिक को श्रम का भुगतान साधन भुगतान होता है, क्योंकि उसने इसके लिए काम किया था।

भुगतान ट्रांजेक्शन: यदि भुगतान की वापसी में सेवा या वस्तुएं देने में कोई बंधन नहीं हो, तो इसे भुगतान ट्रांजेक्शन कहा जाता है। उदाहरण: दान, बुजुर्ग पेंशन,बेरोजगारी भत्ता, छात्रवृत्ति आदि।

राष्ट्रीय आय की गणना की विधियां

I – उत्पाद विधि (मूल्य वर्धित विधि):

Downloaded From www.studymasterofficial.com

- बिक्री + स्टॉक में बदलाव = आउटपुट का मूल्य
- स्टॉक में बदलाव = स्टॉक बंद – स्टॉक आरम्भ
- आउटपुट का मूल्य - मध्यवर्ती उपभोग = सकल मूल्य जोड़ा (जीडीपीएमपी)
- NNP Fc (N.I) = GDPMp (-) निश्चित पूंजी की खपत(अवमूल्यन)
- (+) विदेश से शुद्ध साधन आय (-) शुद्ध अप्रत्यक्ष कर।

आय विधि:

1. कर्मचारियों का मुआवज़ा

2. परिचालन अधिशेष

संपत्ति से आय – किराया व रोयल्टी ब्याज

उद्यमिता से आय - लाभ, कॉर्पोरेट लाभांश, टैक्स बचत (शुद्ध प्रतिधारित कमाई)

3. स्व-रोजगार की मिश्रित आय

- NDP fc = (1) + (2) + (3)
- NNP fc = NDP fc (+) विदेश से शुद्ध साधन आय
- GNP mp = NDP fc + निर्धारित पूंजी की खपत + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (अप्रत्यक्ष कर - सब्सिडी)

व्यय विधि:

1. सरकार अंतिम उपभोग व्यय
2. निजी अंतिम उपभोग व्यय
3. शुद्ध निर्यात
4. सकल घरेलू पूंजी निर्माण = सकल घरेलू निर्धारित पूंजी निर्माण + स्टॉक में परिवर्तन

GDPmp = (1) + (2) + (3) + (4)

NNP fc = GDPmp - निर्धारित पूंजी की खपत + NFIA- शुद्ध अप्रत्यक्ष कर

नोट : यदि पूंजी निर्माण को, शुद्ध घरेलू पूँजी निर्माण के रूप में दिया गया है, तो हम NDPmp. पूंजी निर्माण पर पहुँचते हैं = निवेश

समष्टि का परिचय

Downloaded From www.studymasterofficial.com

स्वायत्त खपत: वह खपत जो आय शून्य होने पर, आय या व्यय राशि पर निर्भर नहीं करती है।

स्वायत्त निवेश: वह निवेश, जो आय के स्तर के बावजूद किया जाता है। यह आमतौर पर सरकारी क्षेत्र द्वारा चलाया जाता है, यह आय निरर्थक है। स्वायत्त निवेश का दायरा आय के सभी स्तर पर समान है।

निवेश गुणक और इसका कार्य

निवेश गुणक, निवेश में वृद्धि और आय में परिणामी वृद्धि के बीच संबंध दर्शाता है।

निवेश गुणक, निवेश में परिवर्तन के लिए आय में बदलाव का अनुपात है।

गुणक (k) =$\Delta y/\Delta I$.

गुणक का मूल्य उपभोग के लिए सीमांत प्रवृत्ति के मूल्य पर निर्भर करता है।(MPC).

k और MPC के मध्य सीधा सम्बन्ध है।

मुद्रास्फीति के प्रकार

व्यापक मुद्रास्फीति: जब अर्थव्यवस्था में सभी वस्तुओं की कीमत में वृद्धि होती है।

छिटपुट मुद्रास्फीति: जब कुछ क्षेत्रों में केवल कुछ वस्तुओं की कीमतें बढ़ती हैं, यह प्रकृति में अनुभागीय है।

मुक्त मुद्रास्फीति: जब सरकार मुद्रास्फीति को खारिज करने की कोशिश नहीं करती है, इसे मुक्त मुद्रास्फीति के रुप में जाना जाता है। मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था में अपनी कीमतों को स्वयं तय करने की अनुमति है, तो मुक्त मुद्रास्फीति होती है।

अवरुद्ध मुद्रास्फीति: जब सरकार मूल्य नियंत्रण, राशनिंग इत्यादि के माध्यम से कीमतों में वृद्धि को रोकती है, तो इसे अवरुद्ध मुद्रास्फीति के रुप में जाना जाता है, इसे दमनकारी मुद्रास्फीति के रुप में भी जाना जाता है।

Downloaded From www.studymasterofficial.com

अति मुद्रास्फीति: अति मुद्रास्फीति एक ऐसी स्थिति को संदर्भित करती है, जहां कीमतें खतरनाक उच्च दर से बढ़ जाती हैं। दाम इतनी तेजी से बढ़ते हैं कि इसके परिमाण को मापना बहुत कठिन हो जाता है। हालांकि, मात्रात्मक शब्दों में, जब कीमतें 1000% प्रति वर्ष (चौगुनी या चार अंक मुद्रास्फीति दर) से बढ़ती हैं, इसे अति मुद्रास्फीति कहा जाता है।

घाटा जनित मुद्रास्फीति: घाटा जनित मुद्रास्फीति, वित्तीय अवमूल्यन के कारण होती है।

क्रेडिट मुद्रास्फीति: क्रेडिट मुद्रास्फीति अर्थव्यवस्था में अत्यधिक बैंक क्रेडिट या मुद्रा आपूर्ति की कारण क्रेडिट मुद्रास्फीति होती है।

दुर्लभता मुद्रास्फीति: दुर्लभता मुद्रास्फीति, जमाखोरी के कारण होती है। जमाखोरी, बेकार व्यापारियों और काले बाजारियों द्वारा बुनियादी वस्तुओं का अतिरिक्त संग्रहण होता है।

लाभ मुद्रास्फीति: जब उद्यमी अपने लाभ मार्जिन को बढ़ाने में रुचि रखते हैं, तो कीमतें बढ़ जाती हैं।

माँग प्रेरित मुद्रास्फीति: वह मुद्रास्फीति जो आय बढ़ने, जनसंख्या विस्फोट आदि, जैसे विभिन्न कारकों के कारण उत्पन्न होती है; और कुल मांग को बढ़ाती है और कुल आपूर्ति से अधिक हो जाती है, और तब वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ा देती है। यह मांग-प्रेरित या अतिरिक्त मांग मुद्रास्फीति के रूप में जानी जाती है।

कॉस्ट -पुश मुद्रास्फीति: जब माल और सेवाओं के उत्पादन के बढ़ते रहने के कारण कीमतें बढ़ती हैं, इसे कॉस्ट -पुश (सप्लाई-साइड) मुद्रास्फीति के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए,यदि मजदूरों का वेतन बढ़ता है, तो उत्पादन की इकाई लागत भी बढ़ जाती है। परिणामस्वरूप, निर्मित व आपूर्ति किये जा रहे अंतिम उत्पादों या अंतिम सेवाओं की कीमतों में स्वत: वृद्धि हुई है।

मुद्रा आपूर्ति-

Downloaded From www.studymasterofficial.com

भारतीय रिजर्व बैंक भारत का केन्द्रीय बैंक है। यह हमारे देश की मौद्रिक प्रणाली का प्रबंधन करता है। इसने हमारे देश में मुद्रा आपूर्ति को चार घटकों में वर्गीकृत किया है।

जो इस प्रकार हैं:

M1 = जनता के साथ मुद्रा। इसमें सिक्के और मुद्रा नोट + जनता की मांग जमा। M1 को संकीर्ण मुद्रा के नाम से भी जाना जाता है;

M2 = M1 + डाक घर बचत जमा;

M3 = M1 + बैंक के साथ जनता का समय जमा। M3 को व्यापक मुद्रा के रूप में भी जाना जाता है ; और

M4 = M3 + कुल डाक घर ऑफिस जमा।

नोट: बचत जमाओं के अलावा, लोग पोस्ट ऑफिस के साथ विभिन्न परिपक्वता अवधि की सावधि जमा रखते हैं।

कागजी मुद्रा: संचलन में करेंसी नोट सामान्य रूप से कागजी मुद्रा के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए, भारत सरकार द्वारा जारी किए गए एक रुपए का नोट कागजी मुद्रा है। आरबीआई द्वारा जारी किए गए नोटों को आम तौर पर बैंक नोट्स के रूप में संदर्भित किया जाता है। वे प्रकृति में प्रोमिसरी नोट्स होते हैं।

भारत में कर संरचना

कर, धन की वह राशि होती है जिसे सरकार द्वारा किसी व्यक्ति या निगमों पर सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से लगाया जाता है ताकि राजस्व उत्पन्न हो जिससे कि भारत में किसी भी काले धन की गतिविधियों की जांच कर सकें।

केंद्रीय सरकार द्वारा आय, सीमा शुल्क, केंद्रीय उत्पाद शुल्क और सेवा कर पर कर लगाया जाता है। राज्य सरकार, कृषि आयकर (केवल बागानों से आय), मूल्यवर्धित कर (वैट) / बिक्री कर, स्टैम्प ड्यूटी, राज्य एक्साइज, भूमि राजस्व, विलासिता कर और व्यवसायों पर कर लगाती है। स्थानीय निकायों को संपत्तियों, चुंगी कर / प्रवेश कर और जल आपूर्ति, जल निकासी आदि जैसी उपयोगिताओं के पर भी कर लगाने का अधिकार है।

प्रत्यक्ष कर –

Downloaded From www.studymasterofficial.c

ये कर प्रत्यक्ष रूप से लोगों पर लगाया जाता है| भारत में एकत्रित होने वाले कर में ये लोग बड़ा योगदान देते हैं|

आयकर -

यह एक प्रकार का कर है, जिसे उन लोगों पर लगाया जाता है जिनकी आय करयोग्य श्रेणी (2.5 लाख प्रतिवर्ष) के अंतर्गत आती है। भारतीय आयकर विभाग, CBDT द्वारा साषित होता है तथा भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग का एक भाग है।

कॉर्पोरेट आयकर

यह कर, एक वर्ष में किसी कॉर्पोरेट द्वारा अर्जित किये गए लाभ पर लगाया जाता है। भारत में कॉर्पोरेट कर की दर, कम्पनियों से एकत्र किया गया कर है।

प्रतिभूति लेनदेन कर

प्रतिभूति लेनदेन कर को 2004 में प्रस्तुत किया गया, जो इक्विटी (यानी शेयर, डिबेंचरों या अन्य कोई सुरक्षा) की बिक्री और खरीद पर लगाया जाता है। दूसरे शब्दों में, किसी व्यक्ति पर सिक्योरिटीज मार्केट के जरिए उत्पन्न होने वाली आय, शेयरों के माध्यम से या डिबेंचर के माध्यम से भारत सरकार द्वारा कर लगाया जाता है और उसी कर को सिक्योरिटीज ट्रांजैक्शन टैक्स या प्रतिभूति लेनदेन कर कहा जाता है।

बैंकिंग नकद लेनदेन कर

बैंकिंग लेनदेन कर, वह कर है जिसे बैंक खातों के डेबिट (और/या क्रेडिट) पर लगाया जाता है। यह स्वचालित रूप से समाशोधन या निपटान की प्रक्रिया में एक केंद्रीय प्रतिपक्ष द्वारा स्वत: एकत्रित किया जा सकता है।

पूंजी लाभ कर:

पूँजी लाभ कर, जैसा कि नाम से पता चलता है कि यह पूंजी में लाभ पर कर है। यदि आप बिक्री संपत्ति, शेयर, बांड और कीमती वस्तुओं आदि पर लाभ कमाते हैं, तो आप को पूँजी लाभ कर का भुगतान करना चाहिए।

- **संपत्ति कर**
- **उपहार कर**

Downloaded From www.studymasteroffical.com

- **आवास कर**
- **व्यावसायिक कर**
- **डीटीसी**

अप्रत्यक्ष कर

आप सुपर बाजार में वस्तुएं खरीदने जाते हैं या एक रेस्तरां में खाना खाने जाते हैं, तो आप अक्सर देखते हैं कि आपने जितनी धनराशि का आनंद लिया, उससे अधिक धनराशि रेस्तरां द्वारा आपसे ली जाती है, यह अतिरिक्त राशि ही अप्रत्यक्ष-कर कहलाती है, जो बिचौलियों द्वारा एकत्र की जाती है और जब बिचौलियों की आय पर सरकार 'कर' लगाती है तो यह अतिरिक्त धन सरकार के कोष में जाता है। अत: यह ज्ञात होता है कि यह कर आम नागरिकों से अप्रत्यक्ष रूप से लिया जाता है।

अप्रत्यक्ष कर :-

- बिक्री कर
- वैट (मूल्य योजित कर)
- सीमा शुल्क
- चुंगी
- उत्पाद शुल्क
- एंटी डंपिंग ड्यूटी
- मनोरंजन कर
- पथकर (TOLL TAX)
- सेवा कर
- जीएसटी- वस्तु एवं सेवा कर

मूल्य संवर्धन कर

जब हम ग्राहक या खरीददार वस्तुओं और सेवाओं की कीमत के लिए अतिरिक्त राशि का भुगतान करते हैं, तो इस अतिरिक्त राशि को वैट कहा जाता है। अब इस कर को 'वस्तु एवं सेवा कर से प्रतिस्थापित कर दिया गया है।

सीमा शुल्क

Downloaded From www.studymasteroffical.c

सीमा शुल्क भारत में आयातित होने वाली वस्तुओं के साथ, भारत से निर्यातित होने वाली वस्तुओं पर लगने वाला एक प्रकार का अप्रत्यक्ष कर है। भारत में, सीमा शुल्क के करारोपण और संचयन के लिए सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 है। यह आयात और निर्यात पर सीमा शुल्क के करारोपण और संचयन को प्रदान करवाता है।

सेवा कर-

भारत में सेवाओं को प्रदान करवाने पर भारत सरकार द्वारा सेवा कर लगाया जाता है। सेवा प्रदाता इस कर को एकत्र करके, सरकार को भुगतान कर देता है। यह सेवाओं की नकारात्मक सूची में सेवाओं को छोड़कर सभी सेवाओं पर शुल्क लिया जाता है।

बिक्री कर:-

बिक्री चलायमान वस्तुओं की बिक्री पर लगाया जाता है।

सीमा शुल्क और चुंगी (वस्तुओं पर):-

सीमा शुल्क भारत में आयातित वस्तुओं पर लगाया जाने वाला अप्रत्यक्ष कर है। भारत में विदेशी देशों से आयातित वस्तुओं पर यह कर लगाया जाता है।

चुंगी वह कर है जो एक राज्य से अन्य राज्य में प्रवेश करने के लिए वस्तुओं की खपत या बिक्री के लिए लागू होता है। सामान्य शब्दों में इसे प्रवेश कर करते हैं।

उत्पाद शुल्क :-

उत्पाद शुल्क देश के भीतर वस्तुओं के उत्पादन पर लगने वाला एक प्रकार का कर है। इस कर का अन्य नाम सेनवैट (CENVAT) (केन्द्रीय मूल्य वर्धित कर) है।

सरकारी बजट और अर्थव्यवस्था

1. बजट को परिभाषित कीजिए?

उत्तर: यह वित्तीय वर्ष जो 1 अप्रैल से 31 मार्च तक चलता है इसमें सरकार की प्राप्तियों और व्यय के आंकलनों का वार्षिक विवरण होता है।

2. बजट के दो व्यापक भागों के नाम बताइए?

उत्तर: i) राजस्व बजट ii) पूंजी बजट

Downloaded From www.studymasterofficial.com

3. दो बजट प्राप्तियां क्या हैं?

उत्तर: i) राजस्व प्राप्तियां ii) पूंजी प्राप्तियां

4. राजस्व प्राप्तियों के दो प्रकारों के नाम बताइए?

उत्तर: i) कर राजस्व ii) गैर-कर राजस्व

5. कर के दो प्रकार कौन से हैं?

उत्तर: a)प्रत्यक्ष कर : i) आय कर, ii) ब्याज कर, iii) संपत्ति कर

b) अप्रत्यक्ष कर: i) सीमा-शुल्क, ii) उत्पाद शुल्क, iii) बिक्री कर

6. पूंजी प्राप्तियों की मुख्य मदें क्या हैं?

उत्तर: a) बाजार ऋण (जनता से सरकार द्वारा उठाए गए ऋण)

b) सरकार द्वारा उधारी

c) विदेशी सरकारों और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं से प्राप्त ऋण.

7. विकास संबंधी व्यय के दो उदाहरण दीजिए?

उत्तर: रेलवे और डाक का योजना व्यय

8. गैर-विकास संबंधी व्यय के दो उदाहरण दीजिए?

उत्तर: i) रक्षा पर व्यय

ii) ब्याज भुगतान

9. बजट अधिशेष को परिभाषित कीजिए?

उत्तर : एक बजट अधिशेष वह है जहाँ अनुमानित राजस्व, अनुमानित व्यय से अधिक होता हैं।

10. बजट घाटे की चार अलग-अलग अवधारणाएं क्या हैं?

उत्तर: a) बजटीय घाटा b) राजस्व घाटा

c) प्राथमिक घाटा d) वित्तीय घाटा

बजट

दो प्रकार की राजस्व प्राप्तियों के नाम बताइए?

उत्तर: i) कर राजस्व ii) गैर कर राजस्व

करों के दो प्रकार क्या हैं।

a) प्रत्यक्ष कर: i) आय कर, ii) ब्याज कर, iii) संपत्ति कर

Downloaded From www.studymasterofficial.com

b) अप्रत्यक्ष कर: i) सीमा-शुल्क, ii) उत्पाद-शुल्क, iii) बिक्री कर

पूंजी प्राप्तियों की मुख्य मदें क्या हैं? ?

a) बाजार ऋण (जनता से सरकार द्वारा उठाए गए ऋण)

b) सरकार द्वारा उधार राशियाँ

c) विदेशी सरकारों और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं से प्राप्त ऋण।

विकास संबंधी व्यय के दो उदाहरण दीजिए?

उत्तर: रेलवे और डाक का योजना व्यय

गैर- विकास संबंधी व्यय के दो उदाहरण दीजिए?

उत्तर: i) रक्षा पर व्यय ii) ब्याज भुगतान

बजट अधिशेष को परिभाषित कीजिए?

उत्तर: एक बजट अधिशेष वह है जहाँ अनुमानित राजस्व, अनुमानित व्यय से अधिक होता हैं।

बजट घाटे की चार विभिन्न अवधारणाओं को बताइए?

a) बजट घाटा
b) राजस्व घाटा
c) प्राथमिक घाटा
d) राजकोषीय घाटा

राजस्व व्यय और पूंजी व्यय का क्या अर्थ है?

i) राजस्व व्यय:- यह सरकारी विभागों को सामान्य रुप से संचालित करने और विभिन्न सेवाओं के लिए प्रावधान जैसे ऋण पर ब्याज शुल्क, सब्सिडी आदि पर आने वाला व्यय है।

ii) पूंजी व्यय:- यह मुख्य रुप से भूमि, भवन, मशीनरी, उपकरण आदि तरह की संपत्तियों के अधिग्रहण पर खर्च आदि और केंद्र सरकार और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा ऋण और अग्रिम को मंजूरी देने से सम्बंधित है।

बजट घाटे की चार विभिन्न अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए?

बजट घाटे की चार विभिन्न अवधारणाएं इस प्रकार है-

a) बजट घाटा:- यह सरकार के कुल व्यय, मौजूदा राजस्व और शुद्ध आंतरिक और बाह्य पूंजी प्राप्तियों के बीच अंतर है।

Downloaded From www.studymasteroffical.com

b) अप्रत्यक्ष कर: i) सीमा-शुल्क, ii) उत्पाद-शुल्क, iii) बिक्री कर

पूंजी प्राप्तियों की मुख्य मदें क्या हैं? ?

a) बाजार ऋण (जनता से सरकार द्वारा उठाए गए ऋण)

b) सरकार द्वारा उधार राशियाँ

c) विदेशी सरकारों और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं से प्राप्त ऋण।

विकास संबंधी व्यय के दो उदाहरण दीजिए?

उत्तर: रेलवे और डाक का योजना व्यय

गैर- विकास संबंधी व्यय के दो उदाहरण दीजिए?

उत्तर: i) रक्षा पर व्यय ii) ब्याज भुगतान

बजट अधिशेष को परिभाषित कीजिए?

उत्तर: एक बजट अधिशेष वह है जहाँ अनुमानित राजस्व, अनुमानित व्यय से अधिक होता हैं।

बजट घाटे की चार विभिन्न अवधारणाओं को बताइए?

a) बजट घाटा
b) राजस्व घाटा
c) प्राथमिक घाटा
d) राजकोषीय घाटा

राजस्व व्यय और पूंजी व्यय का क्या अर्थ है?

i) राजस्व व्यय:- यह सरकारी विभागों को सामान्य रुप से संचालित करने और विभिन्न सेवाओं के लिए प्रावधान जैसे ऋण पर ब्याज शुल्क, सब्सिडी आदि पर आने वाला व्यय है।

ii) पूंजी व्यय:- यह मुख्य रुप से भूमि, भवन, मशीनरी, उपकरण आदि तरह की संपत्तियों के अधिग्रहण पर खर्च आदि और केंद्र सरकार और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा ऋण और अग्रिम को मंजूरी देने से सम्बंधित है।

बजट घाटे की चार विभिन्न अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए?

बजट घाटे की चार विभिन्न अवधारणाएं इस प्रकार है-

a) बजट घाटा:- यह सरकार के कुल व्यय, मौजूदा राजस्व और शुद्ध आंतरिक और बाह्य पूंजी प्राप्तियों के बीच अंतर है।

Downloaded From www.studymasteroffical.com

सूत्र : B.D = B.E > B.R (B.D= बजटीय घाटा, B.E. =बजटीय व्यय ,B.R= बजटीय राजस्व

b) **वित्तीय घाटा**:- यह सरकार के कुल व्यय के बीच अंतर है, राजस्व प्राप्तियां + वह पूंजी प्राप्तियां जो सरकार से अंतिम रूप से उपार्जित होती हैं।

सूत्र : F.D = B.E - B.R (B.E > B.R. उधारी से अलग) F.D=वित्तीय घाटा, B.E= बजटीय व्यय, B.R. = बजट प्राप्तियां

c) **राजस्व घाटा** : - इसमें सरकार का राजस्व व्यय, राजस्व प्राप्तियों से अधिक होता है।.

सूत्र : R.D= R.E – R.R., जब R.E > R.R., R.D= राजस्व घाटा, R.E= राजस्व व्यय, R.R. = राजस्व प्राप्तियों,

d) **प्राथमिक घाटा** : - यह वित्तीय घाटा को ब्याज भुगतान से घटाने से प्राप्त होता है। सूत्र : P.D= F.D – I.P, P.D= प्राथमिक घाटा, F.D= वित्तीय घाटा, I.P= ऋण भुगतान।

भुगतान शेष : अर्थ और घटक

अर्थ: एक देश का भुगतान शेष, एक दी गई समय अवधि में एक देश के नागरिकों और विदेशी देशों के निवासियों के बीच सभी आर्थिक लेन-देनों का व्यवस्थित रिकोर्ड होता है।

व्यापर शेष और भुगतान शेष

व्यापर शेष: व्यापर शेष, निर्यात के मुद्रा मूल्य और भौतिक वस्तुओं के आयात के मूल्य (दृश्य आइटम) के बीच अंतर है।

भुगतान शेष: एक देश का भुगतान शेष, एक दी गई समय अवधि में एक देश के नागरिकों और विदेशी देशों के निवासियों के बीच सभी आर्थिक लेन-देनों का व्यवस्थित रिकोर्ड होता है। इसमें दृश्य और अदृश्य मदें शामिल हैं। अत: भुगतान शेष एक देश के आर्थिक लेन-देनों का विश्व के शेष देशों के साथ व्यापार शेष का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है।

भुगतान शेष की संरचना का लेखांकन

एक भुगतान शेष विवरण एक देश के कुल आर्थिक लेन-देनों के अन्तर्राष्ट्रीय लेखा का संक्षिप्त विवरण है। ये दो प्रकार के खाते होते हैं।

Downloaded From www.studymasteroffical.c

1. **चालू खाता:** निम्नलिखित तीन मदों को इसमें रिकोर्ड किया जाता है।

a) **व्यापार की दृश्यमान वस्तुएं:** निर्यात और आयात की वस्तुओं के शेष को, दृश्यमान व्यापार का शेष कहते हैं।

b) अदृश्य व्यापार: सेवाओं के निर्यात और आयात को अदृश्य व्यापार का शेष कहते हैं। उदाहरण- शिपिंग बीमा आदि।

c) **एकतरफा स्थानान्तरण:** एकतरफा स्थानान्तरण वे प्राप्तियां है जो एक देश के नागरिक प्राप्त करते हैं या भुगतान करते हैं, जो एक देश के नागरिकों को बिना की किसी भुगतान के प्राप्त होती है, उदाहरण के लिए उपहार आदि।

दृश्यमान व्यापार ,अदृश्यमान व्यापार और एकतरफा स्थानान्तरण के शेष का शुद्ध मान, चालू खाते पर शेष कहलाता है।

2. **पूंजी खाता:** यह उन सभी अंतर्राष्ट्रीय लेन-देनों का रिकॉर्ड है जो एक देश के नागरिकों द्वारा उसकी परिसंपत्तियों को एक विदेशी नागरिक के साथ बदलने या एक विदेशी नागरिक के साथ उसकी देयताओं को बदलना शामिल है।

विनिमय

1. विदेशी विनिमय दर को परिभाषित कीजिए?

उत्तर: विदेशी विनिमय दर, वह दर है जिस पर एक देश की मुद्रा को अन्य देश की मुद्रा से बदला जा सकता है।

2. विदेशी विनिमय बाजार का क्या अर्थ है?

उत्तर: विदेशी विनिमय बाजार, वह बाजार है जहाँ अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राओं का एक-दूसरे के लिए व्यापार किया जाता है।

3. स्थिर विनिमय दर का क्या अर्थ है?

उत्तर:स्थिर विनिमय दर, वह दर है जो एक देश की सरकार द्वारा स्थिर और निर्धारित होती है और केवल सरकार ही इसे परिवर्तित कर सकती है।

4. विनिमय की संतुलन दर क्या है?

उत्तर: विनिमय की संतुलन तब होती है जब आपूर्ति और विदेशी मुद्रा के लिए मांग एक-दूसरे के बराबर हो।

5. लोचदार विनिमय दर को परिभाषित कीजिए?

Downloaded From www.studymasterofficial.com

उत्तर: लोचदार विनिमय दर, वह दर है जो विदेशी विनिमय बाजार में विभिन्न मुद्राओं की मांग और आपूर्ति को निर्धारित करता है।

6. मुद्राओं के अधिमूल्यन का क्या अर्थ है?

उत्तर: मुद्राओं का अधिमूल्यन तब होता है जब अन्य देशों की मुद्राओं के संबंध में विनिमय मान में वृद्धि होती है।

7. स्पॉट विनिमय दर को परिभाषित कीजिए?

उत्तर: स्पॉट विनिमय दर, उस दर को संदर्भित करता है जिस पर विदेशी मुद्राएँ स्पॉट पर उपलब्ध होती हैं।

8. अग्रसर बाजार को परिभाषित कीजिए?

उत्तर: भविष्य की सुपुर्दगी के लिए विदेशी विनिमय के बाजार को अग्रसर बाजार के रूप में जाना जाता है।

9. भुगतान शेष से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : भुगतान शेष एक देश का, विश्व के शेष देशों के साथ किए गए सभी आर्थिक लेन-देनों के लेखा विवरण के रिकॉर्ड को संदर्भित करता है।

Downloaded From
www.studymasteroffical.c